नवाचार से नई उड़ान

शासकीय प्राथमिक शाला नयापुरा की सफलता गाथा

:सौजन्य से:

शासकीय प्राथमिक शाला नयापुरा जिला सीहोर (म. प्र.)

डाइस कोड :- 23330512601

संकुल केंद्र:- शासकीय उ.मा.वि. सुभाष, गंज सीहोर

सफलता की कहानी

- कहानी का नाम - **“नवाचार से नई उड़ान शासकीय प्राथमिक शाला नयापुरा की सफलता गाथा ”**
- विद्यालय का नाम - शासकीय प्राथमिक शाला, नयापुरा
- प्रधानाध्यापक का नाम - श्री बृजनंदन शाक्य
- शिक्षक-श्रीमती प्रतिभा श्रीवास्तव
- शिक्षक-श्रीमती सुषमा विसौपिया
- यू-डाइस कोड -23330512601
- जिला का नाम -सीहोर
- विकासखण्ड का नाम -सीहोर
- संकुल का नाम -शासकीय उ.मा.वि. सुभाष, गंज सीहोर
- जनशिक्षक :-श्री भोजराज रघुवंशी
- राज्य का नाम - मध्यप्रदेश
- संपर्क नंबर - 9977926315

पृष्ठभूमि

- शासकीय प्राथमिक शाला नयापुरा एक छोटे ग्रामीण अंचल में स्थित है। यह विद्यालय जिला मुख्यालय से लगभग 8 किलोमीटर दूर, गाँव के मध्य भाग में स्थित है, जिससे अधिकतर बच्चों की पहुँच यहाँ आसानी से हो पाती है। वर्तमान में इस विद्यालय में लगभग 81 विद्यार्थी नामांकित हैं, जिनमें 36 बालक और 45 बालिकाएँ शामिल हैं। विद्यालय में तीन कक्षाएँ, एक बड़ा हॉल एवं एक विशाल खेल मैदान उपलब्ध है। यहाँ कुल तीन शिक्षक कार्यरत हैं, जो बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए पूरी निष्ठा और समर्पण से कार्यरत हैं।
- भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र अर्ध-शुष्क है और यहाँ की अधिकांश जनसंख्या मजदूरी पर निर्भर है। सामाजिक रूप से यह क्षेत्र पिछड़ा हुआ है तथा आर्थिक दृष्टि से यहाँ अधिकांश परिवार निम्न आय वर्ग से संबंधित हैं।

विचाराधीन तथ्य

- क्या कारण है कि विद्यालय में नियमित उपस्थिति नहीं हो रही थी ?
- नामांकन कम होता जा रहा था ?
- समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी क्यों थी ?

समस्या/चुनौतियाँ...

- ग्राम नयापुरा स्थित विद्यालय कई गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा था। यहाँ अधिकांश परिवार मजदूर वर्ग से संबंधित हैं और आर्थिक रूप से कमजोर हैं। काम की तलाश में इनका बार-बार अन्य प्रदेशों में आना-जाना लगा रहता है, जिससे बच्चों की शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा पाता। इसका प्रतिकूल प्रभाव विद्यालय की नामांकन दर और बच्चों की उपस्थिति पर पड़ा। बच्चों के ड्रॉपआउट की संख्या बढ़ रही थी और विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या लगातार घटती जा रही थी।
- शैक्षिक दृष्टिकोण से भी स्थिति अत्यंत चुनौतीपूर्ण थी। पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों के कारण बच्चों की पढ़ाई में रुचि कम हो गई थी। इसके अतिरिक्त, विद्यालय में आधारभूत सुविधाओं का अभाव था – भवन जर्जर अवस्था में था, शौचालय उपयोग लायक नहीं थे और पेयजल की समुचित व्यवस्था भी नहीं थी।
- ग्राम समुदाय की विद्यालय के प्रति उदासीनता और सहभागिता की कमी ने समस्या को और भी गंभीर बना दिया था। विद्यालय और समुदाय के बीच संवाद एवं सहयोग लगभग समाप्त हो चुका था। बालसभाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेलकूद तथा प्रतियोगिताओं जैसी प्रेरक गतिविधियों का भी पूर्णतः अभाव था। समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।
- इन सभी परिस्थितियों में विद्यालय को फिर से सक्रिय और सशक्त बनाना एक अत्यंत कठिन लेकिन आवश्यक कार्य था।

- "एक समय था जब यह विद्यालय सिर्फ एक ईमारत भर था – खामोश, सुनसान और उपेक्षित।“
- "कम उपस्थिति, घटता हुआ नामांकन और बच्चों में पढ़ाई के प्रति लगातार घटती रुचि – समस्याएँ अनेक थीं, और समाधान दूर-दूर तक नजर नहीं आते थे।“
- "लेकिन फिर कुछ बदला। सोच बदली, प्रयास शुरू हुए... और वहीं से शुरू हुआ बदलाव का एक नया सफर।"

“नवाचार से नई उड़ान”
शासकीय प्राथमिक शाला नयापुरा की सफलता गाथा

✨ बदलाव की शुरुआत - एक नई दिशा की ओर कदम

शासकीय प्राथमिक शाला, नयापुरा (जिला सीहोर, म.प्र.)

नयापुरा प्राथमिक विद्यालय में एक समय ऐसा भी था जब यह विद्यालय केवल एक जर्जर इमारत भर था। बच्चे अनियमित रूप से आते थे, अभिभावकों को शिक्षा के महत्व का अंदेशा तक नहीं था और वातावरण नीरस हो गया था।लेकिन बदलाव तब शुरू हुआ जब विद्यालय के शिक्षकों ने ठान लिया कि यह स्कूल अब केवल चार दीवारों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसे एक आदर्श शिक्षा केंद्र बनाया जाएगा। उन्होंने महसूस किया कि शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका असली रूप उस वातावरण और उन गतिविधियों में छिपा है, जो बच्चों की जिज्ञासा को जगाती हैं।राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण और राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान भोपाल द्वारा आयोजित लीडरशिप प्रशिक्षण से शिक्षकों को नई दृष्टि मिली। इन प्रशिक्षणों से प्राप्त विचारों और सुझावों से प्रेरित होकर उन्होंने यह निर्णय लिया कि विद्यालय को पूरी तरह बदलना है।

🌱 समुदाय से जुड़ाव - पहला कदम

सबसे पहला कदम था गाँव और अभिभावकों से जुड़ना।शिक्षकों ने स्वयं गाँव के हर घर तक पहुँचकर यह समझने की कोशिश की कि आखिर बच्चों का नामांकन क्यों नहीं हो रहा।तब सामने आया कि परिवारों में शिक्षा को लेकर कोई जागरूकता ही नहीं थी।लोगों के लिए जीवन केवल मजदूरी करके रोज़मर्रा की आवश्यकताओं को पूरा करना भर था। भविष्य की कल्पना, बच्चों के सपनों और शिक्षा के महत्व को लेकर सोच ही विकसित नहीं हुई थी।

परिवारों को प्रेरणा

- शिक्षकों ने अभिभावकों को समझाया कि–“बच्चों का भविष्य शिक्षा पर निर्भर है। अगर जीवनशैली में छोटे-छोटे बदलाव किए जाएँ, तो बच्चों को नियमित और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सकती है।”शिक्षको के निरंतर प्रयास के पश्चात धीरे-धीरे अभिभावकों ने इस संदेश को अपनाना शुरू किया।गाँव का समाज शिक्षा की ओर जागने लगा और विद्यालय ने अपनी नयी उड़ान भरनी शुरू की।
- विद्यालय की प्रगति केवल शिक्षकों की नहीं, पूरे समुदाय की सामूहिक जिम्मेदारी है।यह उद्देश्य सभी तक पहुचाया जागरूकता रैलिया निकली जिसमे जन समुदाय के लोगो व छात्रो ने भी बढचढ कर हिस्सा लिया |

जिसका मुख्य उद्देश्य इन तीन प्रमुख क्षेत्रों में अद्भुत सुधार करना :-बच्चों की उपस्थिति में वृद्धि शैक्षणिक स्तर में सुधार नामांकन और शिक्षा के प्रति समुदाय में जागरूकता|

विश्वास की नींव पर खड़ा बदलाव

गाँव के कई माता-पिता रोज़गार की तलाश में सुबह से ही खेतों और मज़दूरी पर चले जाते थे। ऐसे में घर के बड़े बच्चे अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल की ज़िम्मेदारी उठाते थे। नतीजा यह हुआ कि कई बच्चों की स्कूल उपस्थिति अनियमित होने लगी।गाँव में उस समय न तो आंगनवाड़ी थी और न ही बालवाटिका। इसलिए छोटे बच्चे पूरी तरह अपने बड़े भाई-बहनों पर निर्भर रहते थे। यह समस्या सिर्फ शिक्षा को ही नहीं, बल्कि बच्चों के समग्र विकास को भी प्रभावित कर रही थी।इस स्थिति को देखते हुए विद्यालय के सभी शिक्षकों और शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों ने मिलकर एक प्रस्ताव तैयार किया—गाँव में आंगनवाड़ी/बालवाटिका की स्थापना की जाए। लेकिन यह प्रक्रिया लंबी थी, इसलिए शिक्षकों ने निश्चय किया कि जब तक आंगनवाड़ी नहीं बनती, तब तक 3 से 5 वर्ष तक के छोटे बच्चों को भी शाला में स्थान दिया जाएगा।इसके लिए शिक्षकों ने स्वयं गाँव में घर-घर जाकर अभिभावकों से संवाद किया। उन्होंने बच्चों और माता-पिता का विश्वास जीता। धीरे-धीरे स्थिति बदलने लगी। अब छोटे बच्चे भी स्कूल आने लगे और माता-पिता भी नियमित रूप से शाला बैठकों में शामिल होने लगे।कुछ ही समय में इस प्रयास का सकारात्मक परिणाम सामने आया। गाँव में आंगनवाड़ी का निर्माण शुरू हुआ और विद्यालय में भी पूर्व-प्राथमिक कक्षा जोड़ दी गई। अब न केवल बड़े बच्चे शिक्षा से जुड़े रहे, बल्कि छोटे बच्चों के लिए भी सीखने और खेलने का सुरक्षित वातावरण तैयार हो गया।इस प्रकार, विश्वास की नींव पर खड़ा यह बदलाव पूरे गाँव के लिए प्रेरणा बन गया।

शिक्षा में नवाचार और सामुदायिक जागरूकता की कहानी

विद्यालय में बदलाव की शुरुआत केवल ढांचे से नहीं, बल्कि शिक्षा की पद्धति से हुई। शिक्षकों ने यह समझा कि बच्चों को पढ़ाना केवल किताबों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि आधुनिक तकनीक और नवीन तरीकों से सीखना ज़रूरी है।तकनीक से सजी नई शिक्षाविद्यालय में स्मार्ट टीवी, टैबलेट और मोबाइल प्रोजेक्टर लगाए गए। इनकी मदद से बच्चों को वीडियो आधारित शिक्षण कराया जाने लगा। कठिन विषय भी रोचक वीडियो और गतिविधियों से सरल हो गए।कक्षा का माहौल बिल्कुल बदल गया—अब बच्चे केवल सुनते ही नहीं, बल्कि देखते, करते और समझते भी थे।शिक्षकों ने गीत, नाटक, खेल और कहानी-कथन को पढ़ाई का हिस्सा बना दिया। बच्चों के लिए हर दिन सीखना एक आनंददायक अनुभव बन गया। यही नहीं, हर छात्र को एक शिक्षक-मेंटॉर दिया गया, जो उसकी प्रगति पर व्यक्तिगत ध्यान रखता था।उत्साहवर्धन और नेतृत्वविद्यालय में हर महीने 100% उपस्थिति वाले छात्रों को प्रमाण-पत्र और उपहार दिए जाने लगे। इससे बच्चों में नियमित रूप से स्कूल आने का उत्साह बढ़ा।इसके साथ ही बाल सभा और बाल संसद का आयोजन शुरू हुआ। बच्चों को नेतृत्व के अवसर मिले, उन्होंने स्वयं निर्णय लेना और जिम्मेदारी निभाना सीखा। यह आत्मविश्वास उनके व्यक्तित्व निर्माण में अहम साबित हुआ।

पौष्टिक भोजन और सीखने का आनंद

मिड-डे मील में स्वाद और पोषण का विशेष ध्यान रखा गया। स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन ने बच्चों को विद्यालय से और अधिक जोड़े रखा।पढ़ाई के साथ-साथ शिक्षा को खेल, कला और तकनीक से जोड़ा गया। बच्चे केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रहकर गतिविधियों से सीखने लगे।

शिक्षा के लिए गाँव जागे - एक जन आंदोलन

विद्यालय ने महसूस किया कि केवल स्कूल ही नहीं, बल्कि पूरा गाँव शिक्षा के आंदोलन में शामिल होना चाहिए। इसी सोच से शुरू हुआ अभियान–"शिक्षा के लिए गाँव जागे"।इस अभियान में न केवल शिक्षक, बल्कि अक्षर साथी, आशा कार्यकर्ता श्रीमती बबली लोधी और शाला प्रबंधन समिति (SMC) के सदस्य भी सक्रिय रूप से जुड़े।गाँव के सरपंच श्री संतोष लोधी जी की मदद से स्कूल के परिसर को सुधार किया गया छत का निर्माण कार्य कराया गया |विद्यालय का रंग रोगन किया गया कक्षों में प्रिंट रिच वातावरण तैयार किया |गाँव में शिक्षा को लेकर जागरूकता फैलने लगी। अभिभावक अब मासिक बैठकों में नियमित रूप से भाग लेने लगे। बच्चों की प्रगति और उनकी ज़रूरतों पर चर्चा होने लगी।परिणामस्वरुप धीरे-धीरे विद्यालय का वातावरण पूरी तरह बदल गया।बच्चे उत्साह से स्कूल आने लगे।पढ़ाई का स्तर बेहतर हुआ।माता-पिता की भागीदारी बढ़ी।और सबसे बड़ी बात, शिक्षा अब केवल किताबों तक सीमित न रहकर जीवन से जुड़ गई।यह कहानी इस बात का प्रमाण है कि जब तकनीक, नवाचार और समुदाय एक साथ आते हैं, तो शिक्षा एक जन आंदोलन बन जाती है।

पहले

अब

सर्वांगीण शिक्षा की ओर गाँव का सफर

विद्यालय में केवल पढ़ाई ही नहीं, बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ज़ोर दिया गया। शिक्षकों ने यह ठान लिया कि बच्चों को जीवन में आगे बढ़ाने के लिए सिर्फ किताबें ही नहीं, बल्कि जीवन-मूल्य भी सिखाना ज़रूरी है।विद्यालय के परिसर को स्वच्छ और हरित बनाने की दिशा में कदम उठाए गए। बच्चे स्वयं स्वच्छता अभियान और वृक्षारोपण में शामिल हुए। इस प्रक्रिया में उन्होंने अनुशासन और जिम्मेदारी जैसे गुणों को आत्मसात किया। शिक्षकों ने भी केवल पढ़ाने की भूमिका नहीं निभाई, बल्कि वे बच्चों के साथी बने—उनके साथ खाते, खेलते और सीखते हुए उन्होंने शिक्षा को आत्मीयता से जोड़ा।

बेटियों की शिक्षा - एक विशेष प्रयास विद्यालय ने महसूस किया कि यदि लड़कियाँ शिक्षा से वंचित रह जाएँगी तो समाज का संतुलन अधूरा रह जाएगा। इसलिए बेटियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया।लड़कियों को स्कूल में लाने के लिए प्रोत्साहन योजनाएँ शुरू की गईं। माता-पिता को समझाया गया कि उनकी बेटियाँ भी उतनी ही योग्य और सक्षम हैं जितने बेटे।विद्यालय और गाँव में शिक्षा जागरूकता रैली निकाली गई। उसमें बच्चों ने जोर-जोर से नारे लगाए:☞ "बेटा-बेटी एक समान, पढ़ें-लिखें बनाएँ नाम!"इन नारों ने पूरे गाँव का वातावरण बदल दिया। धीरे-धीरे अभिभावक अपनी बेटियों को भी नियमित रूप से विद्यालय भेजने लगे |

✨ सफलता की कहानी - एक विद्यालय का बदलाव

✨“कभी यह विद्यालय चुनौतियों से घिरा हुआ था।बच्चों की उपस्थिति बेहद कम थी, औसतन केवल 40% विद्यार्थी ही स्कूल आते थे।नामांकन घट रहा था और अभिभावकों में शिक्षा को लेकर रुचि नहीं थी।लेकिन... आज यह विद्यालय एक प्रेरणा बन चुका है।☞ यहाँ बच्चों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया गया।स्वच्छता, वृक्षारोपण और अनुशासन को जीवन मूल्यों के रूप में पढ़ाई का हिस्सा बनाया गया।शिक्षक खुद बच्चों के साथी बने - उनके साथ खाते, खेलते और सीखते।☞ विशेष प्रयास किया गया बेटियों की शिक्षा के लिए।लड़कियों को स्कूल से जोड़ने हेतु प्रोत्साहन योजनाएँ शुरू की गईं।शिक्षा जागरूकता रैलियों में गूंज उठा नारा:“बेटा-बेटी एक समान, पढ़ें-लिखें बनाएं नाम।”

आज नतीजा सबके सामने है–जहाँ कभी उपस्थिति 40% पर ठहरी रहती थी, अब 95% से अधिक बच्चे नियमित रूप से विद्यालय आने लगे हैं। यह विद्यालय अब सिर्फ पढ़ाई का केंद्र नहीं रह गया है, बल्कि मूल्यों, संस्कारों और प्रेरणा का मंदिर बन चुका है।

यहाँ हर बच्चा आत्मविश्वास से भरा हुआ है। उनके चेहरों पर मुस्कान है और आँखों में सपनों की चमक। यह विद्यालय अब आकर्षण का केंद्र बन गया है–अधिकारी, संस्थाएँ और समाज के लोग यहाँ आकर इस बदलाव को देख प्रेरणा पाते हैं।

सच तो यह है कि यह विद्यालय एक जीवंत प्रमाण है कि– **“यदि नीयत साफ हो, मेहनत सच्ची हो और सहयोग सबका मिले…तो बदलाव असंभव नहीं, बल्कि अवश्यंभावी है।”**

आगामी योजना

भविष्य की योजनाएं: शिक्षा की नई उड़ान की तैयारी

- विद्यालय ने आने वाले समय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बच्चों के समग्र विकास के लिए कई योजनाएं तैयार की हैं:
- **डिजिटल शिक्षा का विस्तार**
  स्मार्ट क्लासरूम की स्थापना और ई-लर्निंग सामग्री का उपयोग कर शिक्षण को और अधिक रोचक और प्रभावशाली बनाया जाएगा। इससे बच्चे तकनीकी रूप से सक्षम बन सकेंगे और आधुनिक शिक्षा पद्धतियों से जुड़ेंगे।
- **पुस्तकालय और विज्ञान प्रयोगशाला का विकास**
  एक समृद्ध पुस्तकालय और व्यावहारिक विज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना कर बच्चों को नवीनतम ज्ञान, प्रयोग और जिज्ञासा-आधारित सीखने से जोड़ा जाएगा।
- **समग्र व्यक्तित्व विकास पर ज़ोर**
  शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद, संगीत, नृत्य और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके।
- **समुदाय की गहन भागीदारी**
  "विद्यालय-समुदाय महोत्सव" जैसे आयोजनों के माध्यम से अभिभावकों और ग्रामवासियों को विद्यालय की गतिविधियों में सक्रिय रूप से जोड़ा जाएगा।
- **सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण**
  बच्चों को स्वच्छता, हरियाली और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया जाएगा। स्वच्छ विद्यालय-स्वस्थ बालक की सोच को व्यवहार में लाया जाएगा।

निष्कर्ष

- यह कहानी इस बात का प्रमाण है कि जब विद्यालय, शिक्षक, अभिभावक और समुदाय मिलकर काम करते हैं, तो किसी भी प्रकार की चुनौतियों को अवसर में बदला जा सकता है। इस परिवर्तन ने न केवल बच्चों के शैक्षिक स्तर में सुधार किया, बल्कि पूरे गाँव के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को भी नई दिशा दी।
- **"नवाचार से नयी उड़ान"**
  यह केवल एक शीर्षक नहीं, बल्कि एक सोच है। यह सोच बताती है कि जब नियत साफ हो और प्रयास सतत हों, तो कोई भी स्कूल असंभव को संभव बना सकता है।